Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=213
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE 2023, VOL- 11/77
https://doi.org/10.5281/zenodo.8195597

साइबर लोकवृति (साइबर पब्लिक स्फेयर) और हाशिये का समाज

डॉ० आशीष अंशु

असिस्टेंट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर किशनपुर गौलापार , उत्तराखण्ड-263139 *bhu.ashish@gmail.com*

Paper Received On: 21 JUNE 2023

Peer Reviewed On: 30 JUNE 2023

Published On: 01 JULY 2023

Abstract

समय एवं स्थान कालिक अवधारणा पूर्णतः निरपेक्ष अवधारणा नहीं होती । समय एवं स्थान कालिक अवधारणा पर विचार करते समय सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और तकनीकि सुलभता की समग्रता को ध्यान में रखना आवश्यक है । परंपरागत तौर पर स्थान विशेष की पहुँच और वहाँ लोकतान्त्रिक तौर पर अपनी बात कहने का अधिकार सर्व सुलभता और समानता के सिद्धांत का पालन शायद हीं करते रहें हो । परंतु तकनीक के विस्तार के साथ लोक स्थानों का स्वरूप परिवर्तित होकर एक आभासी जगत में सृजित हो गया, जहाँ लोक पहुँच ,लोक वार्ता, लोक चिंतन और लोक विमर्श का स्वरूप तीव्र गति से विस्तारित हो रहा है ।

उपरोक्त संदर्भ मे तकनीकि विस्तार और उसकी सुलभता के परिप्रेक्षय में इस शोध पत्र को समझने का प्रयास किया गया है कि नये आभासी जगत मे लोकवृत्ती का दायरा किन नवीन प्रवृत्तियों को उजगार कर रहा है । हाशिये के समाज की भागीदारी को को इस नये साइबर लोकवृत्ती के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है ।

संकेतक शब्द : लोकवृत्ति, हाशिये का समाज, आभासी जगत ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भूमिका

मानव समाज की उन्नत शीलता इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उस समाज के अंतर्गत प्रौधोगिकी का विकास किस प्रकार हुआ है । इस प्रौधोगिकी के कारण समाज का इतनी तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है कि इसके अंतर्गत एक आभासी जगत का निर्माण हुआ है । आभासी जगत के संचालन के लिए विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना तथा क्रांति का एक तीव्र प्रसार हुआ है। परंतु इस आभासी जगत के अंतर्गत एक समुदाय ऐसा भी है जिसके पास सूचना तथा प्रौद्योगिकी से लैस संसाधनों को प्राप्त करने का सामर्थ्य नहीं है । ऐतिहासिक और सामाजिक सांस्कृतिक रूप से हाशिये पर होने के कारण संसाधनों के स्वामित्व पर इनका अधिकार सीमित है अथवा न्यून है । तृतीय विश्व एवं विकासशील देशों के संदर्भ में स्थिति और भी भयावह नजर आती है । इस हाशिये के समाज के अंतर्गत महिलाएं दलित, पिछड़े , जनजातीय समुदायों को तकनीक और सूचना प्रौधोगिकी तक पहुँच के अभाव में समाज की मुख्यधारा से विमुख होते देखा गया है । इस संदर्भ में प्रश्न यह उठता है कि जिस लोकवृत्ति की बात हैबरमास करते हैं कि समाज में संप्रेषण के माध्यम से एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जो विवेकशीलता और तर्कशीलता पर आधारित होगा । लेकिन सूचना और प्रौद्योगिकी ने इस इस विवेकशीलता और तर्कशीलता के विमर्श को अपने स्वरूप में संभ्रांत बना दिया है । परंतु तकनीक जैसे जैसे सस्ती और लोगों के पहुँच में आरही है हाशिये के समाज भी अपनी उपस्थिति को धीरे- धीरे दर्ज कर रहा है । हालांकि यह रफ्तार अभी काफी धीमी है ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन के उद्देश्य

लोकवृत्ति और सूचना प्रौधोगिकी के मध्य सबंधों का विश्लेषण करना एवं इसकी पृष्टभूमि में हाशिये के समाज की वस्तुस्थिति को ज्ञात करना ।

पद्धतिशास्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है । तथ्यों की अभिव्यक्ति हेतु द्वितीयक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है । इस शोध पत्र के लिए शोध आलेखों, पुस्तकों, अनुसंधान पत्रों , एवं इंटरनेट का प्रयोग किया गया है । इस शोध को गुणात्मक आधार पर समाजशास्त्रीय संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है । इस शोध पत्र को तैयार करने में अन्तःवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है , जिसमें सम्प्रेषण के द्वितीयक स्त्रोतों को आधार बनाया है ।

सैद्धांतिक अभिमुखन एवं अवधारणात्मक रूपरेखा :

सार्वजनिक लोकवृत्ति के क्षेत्र में प्रमुख दृष्टिकोण आदर्शवाद और मानकवाद की रही है । यह नागरिक विचारधारा या नागरिक विमर्श पर अत्यधिक जोर देता है । वास्तविक रूप से यह समतावादी और व्यापक भागीदारी की कल्पना करता है । सार्वजनिक लोकवृत्ति सार्वजनिक घटनाओं से निपटने में और सार्वजनिक क्षेत्र के स्थानिक मूल और दृश्यता के प्रभावों को पैदा करता है । एक लाक्षणिक सैद्धांतिक अवधारणा के रूप में यह एक सामान्य संवेदी और समावेशी पहुंच को सार्वजनिक भागीदारी के तौर पर यह सुनिश्चित करता है । आकादमिक दृष्टिकोण से भी यह सभी सार्वजनिक घटनाओं चाहे चर्चात्मक

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हो या अन्यथा की बेहतर समझ को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है । सैद्धांतिक तौर पर यह (1) उन तंत्रों को निर्दिष्ट करके सार्वजनिक क्षेत्र और उसके राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक समझ के बीच द्वंद्वात्मक संबंध को भी दर्शाता है । (2) केंद्रीय भूमिका में यह सार्वजनिक स्थानों की पहुँच और उसके उपयोग के आधार पर समूह के मध्य आपसी संघर्ष और स्वीकार्यता को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित करता है । (3) सार्वजनिक क्षेत्र के परिवर्तन में सामाजिक संरचना, सामाजिक मानदंडों और राजनीतिक कार्रवाई के बीच संबंधों का भी यह विश्लेषण करता है ।

साइबर लोकवृति

लोकवृति की अवधारणा को परंपरागत तौर पर इस रूप में व्याख्यायित किया गया था कि यह एक ऐसा स्वतंत्र क्षेत्र होगा जहाँ समाज के सभी वर्गों और समुदाय के लोगों के लिए अपने विचारों को अभिव्यक्त करने, आलोचनात्मक चिंतन एवं विचार सम्प्रेषण के लिए स्वतंत्र और समान अवसर उपलब्ध होंगें (हैबरमास,1991) । परंतु समय के साथ लोकवृति की अवधारणा में भी परिवर्तन हुआ विशेषतौर पर तकनीक के विस्तार के साथ इसके परंपरागत स्वरूप में भी गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला और इसे और भी वृहद परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा । तकनीक, सूचना और इंटरनेट की क्रांति के विस्तार के साथ हीं हमारे समक्ष लोकवृति के नये विशाल और वृहद स्वरूप से हमारा परिचय हुआ । वर्ल्ड वाइड वेब के जन्म के साथ हीं लोकवृत्ती की आभासी दुनिया का भी जन्म हुआ । इंटरनेट की पहुँच और इसके दायरे के विस्तार ने सोशल मीडिया और सोशल

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नेटवर्किंग के लिए जनन भूमि के तौर पर काम किया है । सोशल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग के निरंतर विस्तार ने आज पूर्णतः एक नये किस्म के लोकवृति का निर्माण किया जिसके लिए समाज वैज्ञानिक प्रचलित तौर पर साइबर लोकवृति शब्द का इस्तेमाल करते हैं (असफ़ बार-तुरा, 2010)।

साइबर लोकवृति के जन्म के साथ ऐसी धारणा बनी की लोगों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और आलोचनात्मक चिंतन को अभिव्यक्त करने के लिए अब एक ऐसा क्षेत्र उपलब्ध है जो सभी के लिए समान और स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है, और कहा गया कि साइबर लोकवृति अपने स्वरूप में अधिक लोकतान्त्रिक और विकेंद्रीकृत होगा । परंतु साइबर लोकवृति पर विचार करते हुए डिजिटल डिवाइड और तकनीकी विलंबना जैसी बातों को नजरंदाज कर दिया गया । लोकवृति हो या साइबर लोकवृति पे किसी समूह या समुदाय की पहुँच मे उसका वर्गीय, जातिय, लैंगिक और सामुदायिक पहचान अत्यंत हीं महत्वपूर्ण होती है ।

हाशिये का समाज:

भारत में हाशिये के समाज के सन्दर्भ में सैद्धांतिक विवेचन पर जब हम दृष्टिपात करते है, तो पाते है कि मार्क्सवादी संदर्शो में किसी भी समुदाय के हाशियों पर होने का सबसे बड़ा कारण उस समाज की संरचना में पाये जाने वाले उत्पादन प्रणाली और उसके अंतर्गत आने वाले उत्पादन की शक्तियां और उत्पादन के संबंध इसे निर्धारित करते हैं । भारत के सन्दर्भ में भी कुछ सीमा तक यह लागू होता है कि हाशिये पर रहने वाले लोगो का

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संसाधनों पर अधिकार है या नही है । लेकिन अम्बेडकरवादी दर्शन के सन्दर्भ में देखा जाये तो इसका सबसे बड़ा कारण जाति व्यवस्था के नियम है जिनके कारण समाज के कुछ समुदायों का स्थान समाज के सबसे निचले पायदान पर है । जिन्हें कालान्तर में कई प्रकार के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक निर्योग्यताओं का सामना करना पड़ा है । इन्हीं निषेधों के कारण उनका सम्पति व ज्ञान पर अधिकार नही रहा तथा वे सामज की मुख्य धारा से वंचित हो हाशिये पर पहुंच गये हैं परिणामतः उन्हे कई प्रकार के चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है । इसके विपरीत प्रकार्यवादी उपागम के समर्थकों का मानना है कि समाज में विषमता का पाया जाना समाज के सामाजिक व्यवस्था के संचालन के आवश्यक होता है । जबकि बेवरवादी विचारधारा से प्रभावित समाजशास्त्रियों का मानना है कि यह विषमता एक सामाजिक रचना (Social construction) का भाग होती है , जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक अन्तःक्रिया के माध्यम से इस प्रकार के संसार का सृजन करता है कि व्यक्ति उससे बाहर नही निकल पाता है । इसी को वेबर ने तार्किकता के लौह पिंजर से संज्ञायित किया है ।

आभासी जगत

समाजशास्त्रीय भाषा में किसी भी समाज के निर्माण के लिए व्यक्तियों के मध्य संबंधों एवं संजीक अन्तःक्रिया का होना आवश्यक है । सामाजिक अन्तःक्रिया पारंपरिक रूप से तीन आधारों पर विवेचित एवं विश्लेषित की गई है । व्यक्ति का व्यक्ति के साथ , व्यक्ति का समुदाय के साथ एवं समुदाय का समुदाय के साथ अन्तःक्रिया समजीक जगत और

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उसके यथार्थ का निर्माण करता है। परंतु समकालीन परिप्रेक्ष्य में सूचना एवं प्रौधोगिकी के विकास के कारण सामाजिक अन्तःक्रिया के प्रतिमानों में बदलाव आया है । व्यक्ति अपनी अन्तःक्रियाओं को संगणक एवं इंटरनेट के माध्यम से स्थापित कर रहा है । अन्तःक्रियाओं के अंतर्गत व्यक्ति की भूमिका में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान संचार उपक्रम और उससे उत्पन्न आभासी यथार्थ (बारडीलार्ड) ने ले लिया है । इस सामाजिक यथार्थ ने एक आभासी जगत की रचना की है । आभासी जगत हमारी अपनी ही रचना है और इसका सृजन मुक्ति का अहसास दिलाता है, पर तभी तक, जब तक रचयिता के विवेक का अनुशासन है । (गुलाब कोठारी, 2022)

साइबर लोकवृति (साइबर पब्लिक स्फेयर) और हाशिये का समाज:

लोकवृति को सामान्य तौर पर इस रूप में देखा जाता है कि यहाँ भिन्न-भिन्न पृष्टभूमि के कर्त्ता जन बहसों और लोक विमर्शों में शामिल हो सकें । यह एक ऐसा स्थान है जहाँ उनकी उपस्थिति सही मायने में दर्ज की जा सके और उनकी आवाज की सुनी जा सके (नैन्सी फ्रेजर,1992) । जिसे हैबरमास कहते हैं की एक ऐसा स्थान जहाँ “आदर्श बातचीत की स्थिति” हो ।

भारतीय समाज असमानताओं पर आधारित समाज है । जिसमें असमानता के बिभिन्न संस्तरण और संरचनाएं एक साथ मौजूद हैं । इन आसमान सामाजिक संरचनाओं की वजह से भारतीय समाज में व्यक्ति या समुदाय की उपस्थिति और उनकी आवाज को समान रूप से दर्ज किए जाने की परिस्थिति बेहद विवेधात्मक है ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन बताते हैं कि भारतीय समाज के हाशिये पर के लोग जैसे आदिवासी, दलित , अन्य पिछड़े वर्ग, किसान , महिला, मजदूर, एल०जी०बी०टी०क्यू० समुदाय आदि के लोगों के लिए किसी भी प्रकार के लोकवृति तक में उनकी पहुँच बेहद सीमित एवं विभेदकारी है, और साइबर लोकवृति भी इससे अछूता नहीं है । साइबर लोकवृति में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कुछ न्यूनतम आर्थिक एवं तकनीकि संसाधनों के साथ तकनीकी ज्ञान का होना अनिवार्य है । परंतु कई सामाजिक अध्ययन एवं स्वयं भारत सरकार के आँकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं की हाशिये पर के समाज के लोगों के पास आज भी संसाधनों तक न्यूनतम पहुँच है(अश्विनी देशपांडे, 2021) ।

ऑक्सफेम की 2022 मे **इंडिया इनीक्वालटी रिपोर्ट 2022: ए मूवमेंट तो एंड डिस्क्रिमनैशन** शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट को देखें तो स्पष्ट तौर पर पता चलता है कि डिजिटल डिवाइड किस प्रकार से एक बड़ा अंतर पैदा कर रहा है । यह स्पष्ट तौर पर इस बात को रेखांकित करता है कि समाज में सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक की पहुंचा एवं उसका वितरण कितना असमानता मूलक है । ऑक्सफेम के इस रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों के 67 फीसदी आबादी के पास किसी न किसी प्रकार का संचार साधन अवश्य है,जबकि इसकी तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों के महज 31 फीसदी आबादी के पास हीं संचार सुविधा उपलब्ध है । समृद्धि के आधार पर इस आंकड़े को देखें तो भारत के अमीर वर्ग के 27.6 फीसदी आबादी के पास कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध है, जबकि 50.5 फीसदी के पास इंटरनेट और मोबाईल की भी सुविधा उपलब्ध है । इसकी तुलना में सिर्फ 2.7%

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गरीबों के पास कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध है और इंटरनेट और मोबाईल उपकरण की यह सुविधा महज 8.9 फीसदी के पास है । बेरोजगारी और रोजगार के संदर्भ में इन आंकड़ों को देखें तो यहाँ भी स्थिति भयावह है, जहाँ 95 फीसदी वेतनभोगियों के पास संचार उपकरण मौजूद है जबकि बेरोज़गारों के मामले में यह महज 50 फीसदी है । तकनीक का लैंगिक विभाजन भी स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है । जहाँ 61 फीसदी पुरुषों के पास कोई न कोई संचार उपकरण अवश्य मौजूद है, जबकि महिलाओं में यह दर घटकर महज 31 फीसदी है । तकनीक और सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँच के जातीय विभाजन और इनके आँकड़ों को हम देखते हैं तो अनुसूचित जाति और जनजाति की स्थिति काफी दयनीय है । अनुसूचित जाति और जनजाति की तुलना में सामान्य एवं ओबीसी वर्ग के पास चार गुना अधिक तकनीक एवं उनके संसाधनों तक पहुंच है । राज्य के स्तर पर हम इस विभाजन को देखें तो पाते हैं कि जहाँ एक ओर नई सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीक के इस्तेमाल में महाराष्ट्र, गोआ और केरल जैसे राज्य शीर्ष पर स्थापित है तो बिहार, छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे राज्य सबसे निचले पायदान पर हैं । शैक्षणिक रूप से परास्नातक एवं बाचस्पति के विद्यार्थियों के मध्य नए सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक की उपलब्धता और उसके इस्तेमाल करने का ज्ञान महज 40 फीसदी है । (ऑक्सफेम, 2022)

75 में एन०एस०एस०ओ के आंकड़े के अनुसार जहाँ शहरी क्षेत्रों में 23 फीसदी आबादी के पास कंप्यूटर उपलब्ध हैं तो सिर्फ 4 फीसदी ग्रामीणों के पास कंप्यूटर उपलब्ध

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। एन०एस०एस०ओ का आंकड़ा कहता है कि शहरी क्षेत्रों में 32 फीसदी आबादी कंप्यूटर चलना जानती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों की सिर्फ 9.9 फीसदी आबादी कंप्यूटर चलाना जानती है।

समापन अवलोकन

आज साइबर लोकवृति भी बहुसंख्यक और संसाधन युक्त प्रवृतियों और शक्तियों के पक्ष में खड़ी प्रतीत होती है। तो यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हाशिये पर के समाज के लोगों की आवाज को सुने जाने और उनके विमर्शों पर गौर करने के लिए इस साइबर लोकवृति तक उनकी पहुँच और आवाज को सुने जाने के लिए इसका इस्तेमाल किस प्रकार से किया जाय यह एक महत्वपूर्ण विचारणीय पहलू है।

इन पक्षों पर गंभीरतापूर्वक चिंतन किए बिना साइबर लोक वृति के सीमाओं का हम ना हीं आलोचनात्मक मूल्यांकन कर पाएंगे और ना हीं इसे लोक समावेशी और लोकतान्त्रिक बनाने के दिशा में ठोस सकारात्मक प्रयास के लिए सरकारों, तकनीकि, सॉफ्टवेयर एवं साइबर कम्पनियों पर लोक की जबाबदेहिता को सुनिश्चित किया जा सकेगा ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Refrences:-

Ardent,H. (1961) Between past and future. New York: The Viking Press.

Bar-Tura, Asif. (2010) Ardent, Habermas and facebook: participations and discourse in cyber public sphere. Humanities and technology review, 29,1-25.

Fraser, N. (1992). Rethinking the public sphere: A contribution to the critique of actually existing democracy. In C. Calhoun (Ed.) Habermas and the public sphere (pp.109-142). Cambridge, MA: MIT Press.

Habermas,J.(1991). The structural transformation of the public sphere: An Inquiry into a bourgeois society. Cambridge, MA: MIT Press.

https://ceda.ashoka.edu.in/viewing-caste-inequality-upside-down/

https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2021-02/Annual-Report2020-2021-English-0.pdf

https://www.patrika.com/opinion/world-under-pressure-to-create-and-be-amidst-virtual-reality

*https://hindi.feminisminindia.com/*2021/04/09/*challenges-of-digital-world-corona-hindi/*

*https://www.oxfamindia.org/knowledgehub/workingpaper/india-inequality-report-*2022*-digital-divide/*

.

Cite Your Article as:

Dr.Aashish Anshu. (2023). SAIBAR LOKVRUTTI (SAIBAR PUBLIC SPHEYR) AUR HASHIYE KA SAMAJ. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 11(77), 425–435. https://doi.org/10.5281/zenodo.8195597

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies